वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जून - 2016

देव समाज उत्सव
और
अन्य संग्राम

बाकि पृष्ठ 20 का

अहं अनुराग। उनके सम्बन्ध में बहुत फिकरमन्द होने की आवश्यकता अनुभव हुई है। इस ओर संग्राम करूंगा।

श्रीमान अग्रवाल जी रिटायरड बीमा अफसर (लखनऊ):- मेरी माता मुझे बचपन में ही छोड़कर स्वर्गवासी हो गई। दादी जी के बाद मेरी ताई जी ने पाला बहुत देखभाल की और पढ़ाया। बहुत वर्ष उन्होंने मुझे सम्भाला, नहाया, धुलाया, खाना खिलाया, हर प्रकार से सम्भाल की। मुझे B.A. तक पढ़ाया और अपने पैरों पर खड़ा किया। यहां आकर दादी जी, ताई जी और बुआ जी के उपकार नज़रा आए हैं। दुख की बात यह है कि मैंने कभी उनके लिए कुछ नहीं किया। अब समय बीत गया है (रो रोकर) अब रोना धोना ही बाकी रह गया है। (आगे वह बोल नहीं सके)

ई.एस ऐस एम मदान साहिब (रिटायरड डरैक्टर चण्डीगढ़):- मुझे इस बात का अफसोस है कि मैं सारी सभाएं नहीं सुन सका। सिर्फ 5 सभाएं ही सुनी हैं। दो बातों का अनुभव हुआ है। दूसरों की बुराई और अपनी बड़ाई देखने से बचना है। दूसरों के गुण और अपनी कमियां देखनी चाहिए। इसमें ही हमारा लाभ है। अपने आपको ठीक मानकर चलना बिल्कुल ठीक नहीं हैं। अफसरों में अपने हालात अच्छे रहे हैं, दूसरों से सन्मान और सेवा बहुत मिलती रही। इसने अन्धेरा पैदा किए रखा। पत्नी के सम्बन्ध में यहां आकर होश आ रही है। पत्नी की सेवा, संग्राम और उपकारों की ओर कभी ध्यान नहीं गया। पत्नी सेवा करती रही, यही समझता था कि यह उसका फर्ज है। सब पत्नियां ही सेवा करती हैं। घर में ऊंचा बोलना, रूखा और कड़वा बोलना ही चलता रहा। 'जी' कहना तो बहुत भार लगता रहा है। यहां आकर पता लगा कि सन्मान वा सद्भाव की कमी है। यहां आकर इधर ध्यान जाने लगा है। अब घर का वातावरण कुछ ठीक हो रहा है। महसूस हुआ है कि सन्मान और स्नेह भाव की कमी है। घर में पत्नी का सन्मान करना आवश्यक है। बहुत बड़ी ग़ल्तफहिमी दूर हुई है। देव धर्म विज्ञान मूलक धर्म है, इसकी सबको आवश्यकता है। जितना अधिक नेचर के पेड़ पौधों के, फूलों, फलों ओर रमणीक स्थानों के निकट रहेंगे जिन्दगी का सफर बहुत सुन्दर ढंग से सफल कर सकेंगे।

बीबी भजन कौर :- मुझसे कुछ ग़ल्तियां हुई, जिसके लिए क्षमा चाहती हूं।

रमेश जी - इस स्थान पर अधिक से अधिक सत्संग होते रहना चाहिए यह मेरी बेनती है। इससे बहुत ज़्यादा लाभ हुआ है। इसके बाद काफी समय होने पर सभा बन्द की गई। इस अवसर पर सबने अपनी पहुँच के अनुसार दान दिया। चार बार जय ध्वनि करके यह प्रोग्राम समाप्त हुआ।

पाठक गण को जैसे सूचित किया गया है कि हमारे विदेश जाने के कारण जुलाई अगस्त का अंक इक्ट्ठा निकाला जाएगा। जून में हमने वह सारा संग्राम जो हमारे धर्म सम्बन्धी करते रहे हैं, वह दिया है। कृपा करके प्रत्येक सभा को पढ़े और उस पर विचार करें तो इससे भी लाभ होगा – धन्यवाद।

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 5
जून – 2016
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

देव समाज उत्सव और अन्य संग्राम

मल्लेका (सिरसा) :- देव धर्म मिशन की तरफ से देव समाज उत्सव मनाने के लिए मल्लेका (सिरसा) में मनाए जाने का फैसला लिया गया। इस उत्सव के लिए चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान जगदीष प्रसाद जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कल्याण से 2 मार्च को शाम तक मल्लेका पहुँच गए। इस उत्सव की प्रवेश सभा 2 मार्च रात 8.00 बजे की गई। इसमें 30 – 35 जनों की हाज़री थी।

पहले श्रीमान जगदीष जी ने कुछ सुन्दर भजनों का गान किया। इस सभा के प्रचालक श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि मनुष्य अधिकतर अन्धेरे में रहता है। अपनी और दूसरों की हानियों और दुखों का कारण बनता रहता है। वह ग़ल्त जाता है, पर उसे अपना आप ठीक लगता है। परन्तु इस मुबारक दर पर ऐसी रोशनी है वा ऐसे प्रभाव हैं जो हमारा ध्यान हमारी अपनी तरफ फेरते हैं। किसी – किसी सौभाग्यवान जन को रोशनी मिलने पर अपने नुक्स और कमियां हानिकारक शक्ल में दिखने लगते हैं। उससे कई प्रकार का नर्क दूर होता है। सभापति जी ने कई सेवकों के सुन्दर दृष्टांत पेश किए जिनको इस संगत में बैठ कर यह रोशनी पाने का सौभाग्य मिला और उन्हें अपना खराब रूप नज़र आया। सभापति जी बार 2 गुरू महाराज के चरणों में झुकते रहे और उन्होंने बताया कि कैसे वर्षो बाद उन्हें अपना एक 2 नुक्स नज़र आया है।

फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य सदा अपने आपको ठीक समझता है, निर्दोष और सुन्दर रूप में देखता है जबकि हर मनुष्य ग़ल्तियों का पुतला है। यह अनोखा दर किसी 2 सौभाग्यवान जन को उसका सही और दोषी रूप किसी अंश दिखा देता है। उन्होंने बताया कि कैसे एक 2 निकटी सम्बन्ध स्वार्थ के कारण भयानक और हानिकारक रूप धारण कर जाता है। इसलिए इस दर से जुड़ने की नितान्त आवश्यकता है। बहुत से जनों ने बाद में बहुत झुक झुक कर खुशी का प्रकाश किया और धन्यवाद दिया। अगले दिन के प्रोग्राम बताकर यह सभा समाप्त हुई

<u>3.3.2016 सुबह 9.00 बजें :-</u> सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, सभापति जी ने बताया कि आज देव समाज का स्थापना दिवस है। इन दिनों में देव समाज की स्थापना की गई थी। देव समाज की स्थापना कैसे हुई, इसको विस्तार से बताया गया। इसकी स्थापना की आवश्यता थी, क्योंकि जो काम देवसमाज ने किया है, वह और किसी धर्म में नहीं हो

रहा। देव समाज हमारे भीतर जो सबसे कीमती वस्तु है, उसके विषय में जाग्रित करती है। मनुष्य की हस्ती में उसकी जीवन शक्ति या आत्मा है। केवल इसी को लेकर उसका शरीर और उसके जीवन की सारी लीला है। इस सम्बन्ध में और कहीं वैज्ञानिक रोशनी या ज्ञान नहीं दिया जाता। यह शरीर से और सभी वस्तुओं से असंख्य गुण कीमती हैं। आम धर्मों में आत्मा का नाम तो लिया जाता है, पर इसका वास्तविक ज्ञान नहीं है। आत्मा को निर्लेप और अमर समझा जाता है। देव समाज में यह ठोस सचाई बताई गई है कि हर मनुष्य की आत्मा का रोगी होना और रहना अपनी और दूसरों की हानि करना, लाजमी है। हर मनुष्य सुख अनुरागी है, इसी कारण रोगी है। देव समाज का यक्ता कारज आत्मा के रोगों को दिखाना और मिटाना है। । देव समाज रोगी रूहों का हस्पताल है। देव समाज ईमारतों, ग्रन्थों उपदेशों और कीर्तनों आदि का नाम नहीं है, यह एक विशेष वातावरण है। वातावरण क्या होता है? इसको भी बड़े सरल ढंग से समझाया गया। यह वातावरण देव ज्योति और देव तेज के प्रभावों का वातावरण है। देवात्मा के अद्वितीय महान देवरूप को दर्शा कर अद्वितीय देव प्रभावों की व्याख्या की गई। इस अनोखे वातावरण ने कैसे जीवनों में परिवर्तन पैदा किया है, उसके बहुत प्रभावदायक उदाहरण पेश किए गए। बहुत से जन प्रभावित होकर सभा के बाद परम पूजनीय भगवान देवात्मा के आगे झुक रहे थे।

3.3.2016 रात 8.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, इस सभा का विषय था "देव समाज से जुड़ने की बरकतें और कटने की हानियां"

सभापति जी ने बताया कि दुनिया में बहुत सी धार्मिक संस्थाएं हैं। परन्तु जो बरकतें समाज प्रदान करती है, वह और कहीं नहीं मिलती। सर्वप्रथम मिथ्या विश्वासों का घोर अन्धकार और हानियां बताते हुए कि किस प्रकार वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाकर अधिकारी मनुष्यों को घोर अन्धकार से मुक्त करती है। अच्छे भाई, पति पत्नी, नेक बेटे, अच्छे नौकर और मालिक बनाकर नया रूप देती है। हर पक्ष में विकास का राही बनाती है और उन्नति प्रदान करती है। और बरकतों की ओर ईशारा करते हुए सभापति जी ने श्रीमान बलदेव सिंह जी को इस विषय पर बोलने की प्रार्थना की।

श्रीमान जी ने कहा कि देव समाज नई आंखें प्रदान करती है। उपकारियों के रूप को दिखाती है। राक्षसी इन्सानों को उपकारियों के प्रति अनर्थकारी होने से बचाती है। दूसरों के दुखों और अभावों को देखने की सर्मथ्य प्रदान करके यथायोग्य सेवाकारी बना देती है। खुदगर्जी के राक्षसों को मन कि जो अन्दर बैठे हुए हैं, उन्हें दिखाकर, उनसे रक्षा कर देती है। महान और उच्च हस्तियों की सुन्दरता दिखाकर अन्धों को नई दृष्टि देती है। नीचता और मिथ्या की आग में जल रहे मानवों का उस आग से बचाती है। नेक, भले और भरोसे योग्य मनुष्य बनाकर उनको परसेवा के कारज में लगाकर जीवन की सफलता के मार्ग पर डालती है। ऐसी देव समाज को, उसकी संगत और शिक्षा को अधिक से अधिक अपनाने की और अपने आपको महा हानियों से बचाकर अपने जीवन का भला करने में लगाती है। देवात्मा का सच्चा दावा है कि कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो मेरे साथ जुड़ा हो और पहले से बेहतर न बना हो, और कोई ऐसा मनुष्य नहीं, जो मुझसे दूर हुआ हो, वह पहले से हानिकारक वा बुरा न बना हो।

4.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की छवि का फूलों द्वारा अर्चन किया गया। फिर सभापति जी ने सत्गुरू के महान देवरूप की अपार महिमा को अनुभव करते हुए बताया कि उनका मिशन

भी एक जंग था। उन्होंने मानव जीवनों में भरे हुए मिथ्या और पापाचार के विरूद्ध घमसान युद्ध सारी उमर किया और अधिकारी आत्माओं को कोयलों से हीरे की तरह चमकदार बना दिया। वह किस प्रकार के अपने सेवक चाहते थे और किस प्रकार के कृतज्ञता भरपूर सम्बन्ध चाहते थे, उसका उदाहरण सरदार साहिब सरदार जमीयत सिंह जी वा फरिश्ता तहसीलदार सरदार सावन सिंह जी की उदाहरण हृदयगत भावों से पेश की। बहन भाईयों की उदाहरणें दी कि सत्गुरू ने सत्यावती जी सीकरी जैसी बहन बना दी जिसने सारी उमर अपनी पगली बहन को सम्भाला। और एक भाई का उदाहरण दिया कि भाई को कैद हो गई, दूसरे भाई ने घर में ही जेल बना ली। माननीय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी का अपने भाईयों के साथ बहुत स्नेह भरा सम्बन्ध था। माननीय श्रीमान रूपचन्द जी ने भाई के मर जाने पर बहुत तपस्या करके उसके भरे पूरे परिवार की किस प्रकार पालना की यह दृष्टांत हमारी आंखों देखा है। पति पत्नी का आदर्श श्रीमान राम सिंह जी ने वर्षों अपनी पत्नी की सेवा करके हमारे सामने रखा। इस प्रकार मानव जीवनों में किए अदभुत कारज का ब्यान किया, बहुत प्रभावदाय मण्डल बना और गुरू के आगे सबके शीश झुक रहे थे।

3.30 बजे दुपहिर:- सभापति श्रीमान बलबहादुर जी। एक सेवक श्रीमान बलदेव सिंह जी की बार-2 प्रार्थना पर उनके घर में सभा रखी गई, जो वहां से 4 किलोमीटर था। सेवकगण वा उनके रिश्तेदार उपस्थित थे। घर में उनके बेटे की शादी हुई थी, इसलिए पति पत्नी का कैसा परस्पर स्नेह, सेवा, त्याग भरा, सम्बन्ध होना चाहिए, उसका ब्यान किया। "विवाहित जीवन" पुस्तक को बार 2 पढ़ने की प्रेरणा की। गुरू महाराज के मिशन के लिए 1300 रूपये दान प्राप्त हुआ।

4.3.2016 रात 8.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इसमें बताया गया कि मनुष्य के चालक भावों द्वारा ही उसे तृप्ति मिलती है। यह सुख उसे गुलामी की जंजीरे डाल देते हैं। प्रत्येक सुख जब अनुराग बन जाता है तो वह दुखों और हानियों का कारण बनता है। कोई जप, तप इसमें सहायक नहीं होते। इसलिए अपने परिचालक भावों का ज्ञान प्राप्त किए बिना मनुष्य बर्बादी से नहीं बच सकता। केवल देवात्मा का दर ही इस सम्बन्ध में रोशनी दे सकता है।

गंगा नगर

केसूपुरा से रवाना होकर सारी पार्टी 5.3.2016 को गंगा नगर में पहुंची, पहली सभा 8.30 बजे रखी गई।

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- जैसे दिल्ली में आड-ईवन नम्बर की गाड़ियों को अलग-2 दिन चलाकर दिल्ली के दूषित वातावरण को कम किया गया है । उसी प्रकार एक और दूषित वातावरण हैं, जिसके हम सब शिकार हुए रहते हैं? यह है नीच सुख अनुरागों और उनकी तृप्ति का वातावरण। उन्होंने बताया कि श्रीमान नौध सिंह जी सीधे सादे आदमी थे, परन्तु एक अपने वेदान्ती सम्बन्धी के यहां रहने से सब प्रकार के पापों में लिप्त हो गए और समझते थे कि मैं ब्रह्म हूँ, मुझे कोई दोष नहीं लगता। परन्तु सौभाग्य से उन्हें देव प्रभावदायक वातावरण मिला, जिससे उनको न केवल सब नशों वा पापों से मुक्ति मिली बल्कि उन्होंने ईमानदारी, पवित्रता, जैसे गुणों को धारण किया और बेहद सेवाकारी बनकर इस दुनिया से गए, और अपने 40 के लगभग सम्बन्धियों को इस वातावरण से जोड़ गए। वह ऋषि रूप धारण करके इस दुनिया से गए। बुरे मनुष्य बुरा वातावरण पैदा करते हैं और अच्छे

इन्सान अच्छा वातावरण चुनते हैं। देव प्रभावों के वातावरण में रहकर मनुष्य पहले से बेहतर बनते हैं।

5.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। दो भजनों के गान के बाद सभापति जी ने बताया कि देव समाज नेक जनों की एक मात्र यक्ता समाज है। बदी को छोड़े बिना और दूसरों के लिए कुछ किए बिना मनुष्य नेक इन्सान नहीं बन सकता। भारतीय संस्कृति के अच्छे पक्षों को बताया गया, बड़े 2 राजों ने धर्म ढूढ़ने के लिए राज पाठ त्याग दिए। हमारी संस्कृति में शाकाहार, धर्म पाने की अकांक्षी होना आदि मूल्यवान गुण समझा जाता रहा है, जो पक्ष अब ख़त्म हो रहे हैं, परन्तु देव समाज इन मूल्यों का सत्कार करती है। हमारी संस्कृति की खूबियों का विकास करती है। भारतीय संस्कृति की लाज है यह सोसाईटी। सेवक की उपाधि देव समाज के मैंम्बर को दी गई है जैसे :-

"सेवक वह जो पर सेवा करे, स्वार्थ को नित खोए,
तन, मन, धन अर्पण करे, सेवक कहिए सोए"

प्रत्येक सेवक के लिए आवश्यक है कि वह मिथ्या और पापों से बचा रहे और कुछ न कुछ औरों के काम आए।

12.15 बजे श्रीमान बलबहादुर सिंह जी स्थानीय पब्लिक स्कूल में प्रिंसीपल सरताज सिंह जी की प्रार्थना अनुसार उनके स्कूल में नीति करवाई।

6.3.2016, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी :नेचर में जैसे विकासक्रम में सब जगतों में विकास हो रहा है, उसी प्रकार मनुष्य जगत में से एक ऐसी हस्ती विकास क्रम ने पैदा कर दी, जिनसे अध्यात्मिक जगत में नई सच्चाईयां खोजने की समर्थ्य है। वह मानवता के लिए यह एक नया उपहार है। उन्होंने हमारे अस्तित्व आत्मा के विषय में सचाईयां खोजी हैं। हम अधिकतर शरीर के सुखों को लेकर ही जीते हैं। हमारे गुरू हमारा ध्यान हमारे अस्तित्व में सबसे कीमती वस्तु आत्मा की ओर फेरते हैं। उन्होंने फरमाया है कि हमारे आत्मा की हानि सबसे बड़ी हानि है। इसका विकास सबसे बड़ा लाभ है। यह विवेक हमें देवात्मा की रोशनी में मिलता है। जीवनी शक्ति वा आत्मा का असल विकास स्वार्थ रहित परोपकार में है।

6.3.2016 दुपहिर 4.30 बजे :- सभापति श्रीमान श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस सभा में बताया कि हमारे भीतर एक गहरा विश्वास है कि हम ठीक हैं। मैं कभी गल्त नहीं होता। मेरी सोच, मेरा विश्वास, मेरी दिनचर्या ठीक है। फिर हाजरीन प्रश्न उत्तर करते रहे और कुछ उनमें से जवाबों से सहमत भी हुए।

6.3.2016 सभापति श्रीमान बहबहादुर सिंह जी :- इस सभा में बताया गया कि यदि हमें अपने परिचालक भावों का ज्ञान हो जाए, तो हमारी बहुत सुरक्षा हो सकती है। अपने भावों से अज्ञानता से हमारी बहुत हानि होती है। इस विषय पर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी कुछ रोशनी पाई।

7.3.2016 शाम 5.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने दो कहलाने वाले साधुओं के उदाहरण दिए कि एक साधू के बिमार होने पर दूसरे साधू ने न केवल उसकी स्वयं सेवा नहीं कि बल्कि ग्रामवासियों को भी नहीं करने दी। एक साधू ने अपनी अन्धी माता के लिए दरवाजा बन्द कर लिया, जो अपने बेटे को मिलने आई थी। माया, माया कहकर इन धर्मों ने सम्बन्धों पर कठोराघात किया है। भगवान देवात्मा फरमाते हैं कि सम्बन्ध तोड़ने की नहीं बल्कि धर्म सम्बन्धों में सदव्यवहारों में है। सम्बन्धों के स्वर्गीय नज़ारों को पेश किया।

8.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि विकास का नियम ने जो बरकतें दी हैं, उससे हम लाभ उठा रहे हैं। सत्गुरू ने विकास को आगे बढ़ाया है।

अध्यात्मिक दुनिया में उन्होंने फरमाया है कि श्रद्धा की अत्यन्त आवश्यकता है। श्रद्धा और कृतज्ञता की सुन्दर तस्वीर पेश की। फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कृतज्ञता से भरकर अपने भावों का वर्णन किया।

8.3.2016 शाम 5.30 बजे सभापति जी :- श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सच्चा सन्मान, सच्ची पूजा, सच्चा सत्संग, सच्ची सभा क्या होती उसका विश्लेषण किया।

8.3.2016 रात 8.30 बजे:- इस सभा में नेचर क्या है, उसके अटल नियम क्या हैं, उसके उदाहरण दिए गए। देव समाज की आत्मा के सम्बन्ध में शिक्षा भी नेचर के अटल नियमों पर आधारित है। एक और अटल नियम है उच्च संगत में रहने का प्रयत्न करना। उच्च संगत में ही उच्च परिवर्तन होते हैं।

9.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने इंगलैंड के एक महान व्यक्ति Sir Philip Sidney की उदाहरण दी जिन्होंने अपने विरोधी सिपाही को अपना पानी पिला दिया और कहा कि "Thy need is greater than mine" इसकी व्याख्या करते हुए बताया कि सेवाकारी अस्तित्वों की रक्षा होती है, हानिकारक डायनासोर जैसे अस्तित्व नष्ट होने के लिए हैं। उदाहरण पेश किए कि जिसके जीवन से कुछ नहीं निकलता, वह लाश की तरह हैं। दूसरों के लिए कुछ करने की प्रेरणा की गई। कम से कम पक्षियों को दाना, पानी ही डाल दें ।

पदमपुर

9.3.2016 से 13.3.2016 तक शाम को 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। धर्मों के बढ़ने के साथ पाप, मिथ्या और अत्याचार बढ़ रहे हैं, पूजा, पाठ धर्म नहीं। धर्मों में कट्टरता बहुत घातक है। देव धर्म का काम छोटे लैवल पर हो रहा है, परन्तु मिथ्या और पाप मिटाने का काम हो रहा है। कुछ परिवर्तन बताए गए ।

10.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। अन्धेरा और रोशनी आपस में विरोधी हैं। अन्धेरे में देव समाज के दो बहुत उच्च कोटि के धर्म सम्बन्धियों की जान चली गई। अन्धेरा हानिकारक है। मान्सिक अन्धेरा भी बहुत घाटे में रखता है। हमारी संसारिक प्राप्तियां भी अन्धेरा पैदा करती हैं। धन, प्रभुत्व, पद मनुष्य को अन्धा कर देता है। सब नीच प्रेम अन्धेरा पैदा करते हैं। सात्विक भाव सात्विक रोशनी में उच्च भावों के व्यवहार करवाते हैं। शुक्रगुज़ारी की रोशनी है जो उपकारियों को दिखाती है। उनके लिए सेवाकारी बनाते हैं। आत्मिक अन्धेरा परम पूजनीय भगवान देवात्मा दिखाते हैं, उसे दूर करने की सामर्थ्य रखते है।

10.3.2016 रात 8.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा में बताया गया कि अपने आपको मनुष्य नहीं जानता, अपनी शक्ल को, अपनी विद्या, अपने धन को जानना अपने आपको जानना नहीं। मुख्य रूप में अपने स्वभाव को, दूसरों के प्रति अपने व्यवहारों को जानना ही अपने आपको जानना है। मनुष्य के जीवन के सब दुख, हानि और घाटे अपने आपको न जानने के कारण ही हैं।

फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य चाहकर भी अपने आपको जान नहीं सकता। बड़े छोटे सब अपने स्वभाव से अनजान हैं। जब किसी बिमारी का पता लगा, तो उसका ईलाज भी ढूढ़ा गया, परन्तु हमारे परिचालक भाव जो हमें आत्मा का रोगी बनाते हैं, हमारे स्वभाव को बिगाड़ते हैं, उसका पता

देव प्रभावों में आकर ही लगता है, जो देवात्मा की देव ज्योति और तेज से सम्पन्न हैं। अपने आपको जाने बिना हम दुखों और हानियों से नहीं बच सकते ।

11.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि हमें दो बातें सदा याद रखनी चाहिए कि जिसने जन्म लिया है, उसने मरना अवश्य है। मौत को सत्य मानकर ही ठीक जीवन जी सकते हैं। मरने के बाद संसारिक पदार्थ यहीं रह जाते हैं, हमारे साथ हमारा नीच जीवन या उच्च जीवन ही जाता है। परन्तु हमारा ध्यान धन, सम्पति, पदवी आदि प्राप्त करने की ओर ही जाता है, जो यहां ही रह जाती हैं। यही वस्तुएं हमें सार लगती हैं। "उच्च जीवन है सार" यह संसारिक वस्तुएं हमें देखने ही नहीं देती। इन दोनों बातों का सदा याद रखने की प्रेरणा की गई।

11.3.2016 रात 8.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। नेचर के विषय में ज्ञान दिया गया। नेचर क्या है, कितनी विशाल है, इसमें परिवर्तन का नियम क्या है। उच्च परिवर्तन से कैसे श्रेष्ट अस्तित्व पैदा होते हैं। यह विस्तार से बताया गया।

12.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। एक-2 धर्म का विश्वासी दूसरे धर्म के विश्वासियों का शत्रु बन जाता है। एक दूसरे को मारकर धर्म कमाना समझा जाता है। यह धर्म नहीं पाप है, नीच जीवन जो मनुष्य की सब से कीमती वस्तु आत्मा की हानि करता है। उच्च जीवन सार है, वह उच्च भावों से आता है। किसी पूजा, पाठ नमाज, रोज़े, जगराते से नहीं आता। ईमानदारी उच्च भाव है। ईमानदार बनना ही कितना कठिन है। सात्विक भावनाओं अर्थात श्रद्धा, कृतज्ञता के बिना उच्च जीवन नहीं। इन भावों की सुन्दर घटनाएं पेश की गई।

12.3.2016 रात 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने हाजरीन से पूछा कि शुक्रगुज़ार कौन होता है? कुछ अधूरे प्रश्नों का संशोधन करते हुए कृतज्ञता की परिभाषा बताई गई। कुछ शुक्रगुज़ार व्यक्तियों के उदाहरण पेश किए। आखिर में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी कुछ हृदय को छूने वाली घटनाएं बताई।

13.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। उन्होंने फरमाया कि देवात्मा के देव रूप का जानना, खासकर पहचानना सुख अनुरागी मनुष्य की पहुँच से परे है। उनके रूप को जानकर हमारी बहुत सुरक्षा होती है। पहली बात हम मिथ्या के चुंगल से निकल जाते हैं, दूसरी बात मोटे पापों से गहराई से बचने की है, तीसरी बात अपनत्व से निकलकर हर रोज़ किसी के काम आने की है। उदाहरणें दी गई। हाजरीन बहुत प्रभावित हुए और बाद में भी प्रश्न पूछते रहे। 3910 रूप्ये दान प्राप्त हुआ।

थराजवाला

दोनों धर्म सम्बन्धी 13 तारीख़ को दुपहिर तक थराजवाला पहुँच गए। धर्म सम्बन्धियों को मिले और उन्हे मन्दिर का सुन्दर निर्माण करने की प्रार्थना की। यहां से दोनों धर्म सम्बन्धी कुन्दण ढाणी में पहुँचे, वहां 4-5 पुराने देव समाजी परिवारों के बच्चों को मिले। सबने बहुत खुशी अनुभव की। 2700 रूपये के लगभग हित स्त्रोत का चन्दा आदि प्राप्त हुआ। उन्होंने संगत में आकर लाभ उठाने का वादा किया ।

गोनियाना

यहां से दोनों धर्म सम्बन्धी गोनियाना पहुंचे। यहां 8.30 बजे सभा रखा गई। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने बताया कि देव

समाज कितनी नायाब समाज है, जहां मनुष्य का ध्यान अपनी ओर फेरा जाता है। अपनी कमियां देखने की सामर्थ्य मिलती है। उदाहरणों द्वारा संगत की विशेषता दर्शाई ।

15.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। श्रीमान जी ने बताया कि जैसे मनुष्य के अन्धेरे और रोशनी में अन्तर पता है, उस प्रकार पाप और पुण्य का ज्ञान नहीं। किसी भी अस्तित्व को विकसित करना पुण्य है। मनुष्य की प्रत्येक चिन्ता वा क्रिया उसकी जीवनी शक्ति की हानि और लाभ से जुड़ी हुई है। लाखों, करोडों कहलाने वाले धार्मिक मनुष्यों को भी पाप, पुण्य का बोध नहीं। भगवान देवात्मा ने आत्म तत्व का अद्वितीय ज्ञान दिया है। सब नीच भाव मनुष्य के आत्मा की हानि करते हैं। उच्च भाव आत्मा का विकास करते हैं। कई सुन्दर उदाहरण दिए गए जिससे बहुत प्रभावदायक मण्डल बना।

15.3.2016 शाम 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभा में बताया गया सैलाब वा सुनामी की हानि को हम अनुभव कर सकते हैं। उसकी तबाही, बर्बादी, दुख को अनुभव करते हैं। परन्तु पाप और मिथ्या का जो सैलाब चारों तरफ आया हुआ है, वह नज़र नहीं आता। देव समाज के पूजनीय बानी परम पूजनीय देवात्मा ने पाप और मिथ्या की भयानकता को देखा और इसमें डूबती हुई मानवता को देखा और उसे बचाने का बीड़ा उठा लिया। कैसे मरती रूहों को बचाया उसका उदाहरणों द्वारा सुन्दर चिन्तन किया ग्या। बहुत प्रभावदायक सभा थी।

16.3.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। विकास के क्रम को सब जगतों में समझकर ही इस क्रम में भगवान देवात्मा के आर्विभाव को समझ सकते हैं। उन्होंने अपने देव प्रभावों से ऐसा वातावरण पैदा किया है, उसकी महानता को बताया गया। ऐसे गुरू से जुड़ने से बरकतें और नेहमते मिलती हैं, उन्हें उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत किया, जिससे हाजरीन का दिल गहराई से पिघल रहा था।

कल्याण

5 अप्रैल 2016 को श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कल्याण में मास्टर भाग सिंह जी के घर पहुँचे और उनके साथ हितकर बातचीत की। इस बातचीत में बताया गया कि हर मनुष्य अपने आपको ठीक समझता है, इसलिए सबसे अधिक अपने आपको प्यार करता है। मनुष्य अपने बच्चों को भी बहुत प्यार करता है, इसलिए उसकी बड़ी से बड़ी ग़ल्ती, गुनाह को भी क्षमा कर देता है। अपने को प्यार करने के कारण अपनी ग़ल्तियों को भी स्वीकार नहीं करता। इस बातचीत से बज़ुरग धर्म सम्बन्धी और उनका परिवार बहुत प्रभावित हुए और धन्यवादी अनुभव कर रहे थे।

शाम 7.00 बजे इस सभा में बताया गया कि हमारे भीतर आत्मा जो मुख्य वस्तु है, उसके विषय में उदासीन वा अन्धेरे में रहकर हम जीवन बिता रहे हैं। यदि हम इसे मुख्य समझें तो इसकी हानि और लाभ जानने के लिए इच्छुक हों। यदि यह बात समझ में आ जाए तो जीवन सफल हो सकता है। हमारे जीवन की सारी लीला आत्मा को लेकर है, इसलिए इसके विषय में फिक़रमन्द होने की आवश्यकता हैं।

कुआं खेड़ा

8 अप्रैल को श्रीमान बलदेव सिंह जी करनाल श्रीमान झंडा सिंह जी के घर पहुँचे। कल्याण से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी पहले ही पहुंच चुके थे। सारे साथी रात तक कुआंखेड़ा पहुँच गए। 8.30 बजे सभा की गई। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने ब्यान

किया कि जाप, पाठ, स्नान आदि को धर्म समझा जाता है। जगराते वा कुंभ स्नान से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं धर्म शुभ व्यवहारों में है। शुभ व्यवहार अच्छे भावों के बिना नहीं हो सकते। उच्च भावों के द्वारा सम्बन्धों में मेल आता है। धर्म शुभ व्यवहारों का नाम है। गुरू महाराज अपने प्रभावों के द्वारा परिवार में स्वर्ग पैदा करते हैं। ठोस घटनाओं के द्वारा उन्होंने अपना विषय को समझाया। अच्छा प्रभावदायक मण्डल बना।

9.4.2016 सुबह 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि पौष्टिक खुराक मिलते रहने से शरीर तन्दरूस्त रहता है, नहीं तो कमज़ोर होने लगता हैं। विद्या प्राप्ति भी मनुष्य की आर्थिक अवस्था की काया पलट देती है। धर्म प्राप्ति में भी सहायक होती है।

विकास क्रम में 6½ करोड़ लोगों में से एक हस्ती ऐसी पैदा हुई है, जिसके भीतर मनुष्य प्रकृति नहीं देव शक्तियों से सम्पन्न देव प्रकृति आई है। उन्होंने आत्मा के रहस्य को जाना, जो आज तक किसी ने नहीं जाना था। मनुष्य क्या है? उसको कौन चलाता है? उसका कैसे विनाश और कैसे विकास होता, इन सत्यों की खोज की। जो उनके साथ जुड़ता है वह बरकतों से मालामाल हो जाता है। देवात्मा का सम्बन्ध आत्मा की पौष्टिक खुराक है। इसलिए मनुष्य के विकास के लिए यह अनिवार्य है।

9.4.2016 शाम 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया मनुष्य की विरासत और वातावरण मनुष्य के बनने और बिगड़ने के मुख्य स्त्रोत हैं। मनुष्य का कंटरोल वातावरण, संगत पर है, विरासत पर नहीं। इसका चुनाव हमने स्वयं करना है। पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का वातावरण उच्च परिवर्तन पैदा करता है, इसकी घटनाएं बताई गई। जगदीष जी जो सभा में वर्तमान थे, उन्होंने भी चन्द शब्दों में अपने भीतर ग़जब के परिवर्तन को बताया, जिससे बहुत प्रभावदायक मण्डल बना।

10.4.2016 सुबह 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया जैसे गिणती सीखे बिना गणित नहीं आ सकता। पैंती सीखे बिना भाषा नहीं आ सकती, उसी प्रकार उच्च भावों के बिना कोई धार्मिक ज्ञान भी निरर्थक है। सभा के बाद भी इस विषय पर चर्चा होती रही। 2000 रूपये दान प्राप्त हुआ 1000 रूपये श्रीमान रतन सिंह जी, 500 रूपये श्रीमान झंडा सिंह जी का योगदान था।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

विशेष सत्संग

जैसे सामाजिक पत्रों में बताया गया था, 22 अप्रैल 2016 से 1 मई 2016 तक 10 दिनों का विशेष सत्संग पिछले वर्षों की तरह देव आश्रम डेराबस्सी के निकट रखा गया। मार्च में आश्रम में कोई लाख रूपये या कुछ इससे भी अधिक खर्च करके एक कमरे को बढ़ा कर नया साधन मन्दिर तैयार किया गया, जिनकी छत वा दिवारों को आधुनिक ढंग से सजाया गया। फालस सीलिंग बड़े डिज़ाईन से छत पर की गई। रोशनी, पंखों आदि का बड़ा अच्छा प्रबन्ध किया गया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की छवि की स्थापना के लिए टीक की लकड़ी का दिवार पर आसन तैयार किया गया। बहुत सुन्दर मैटस बिछाकर सफेद चादरों से बिछाई की गई। 15 - 20 कुर्सियां रखी गई। गर्मी का ख़्याल करके एक A.C का भी प्रबन्ध किया गया। 22 तारीख तक मन्दिर सजधज के साथ तैयार था।

सत्संग से लाभ उठाने के लिए भी गंगानगर, गजसिंहपुरा, लखनऊ से अग्रवाल साहिब (Retd. LIC Officer) यमुनानगर से श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा, अम्बाला से अशोका जी, श्रीमान ओम प्रकाश जी आदर्श, देहरादून से डा० जयरथ और उनकी धर्मपत्नी, मेरठ से तीन साथी सेविका, मौंड़ा (संगरूर) बंगा, नवां शहर से एक 2 सत्संगी, पटियाला से एक दिन के लिए एक जन, पदमपुर और गंगा नगर से डा० मन्शा सिंह, Retd. Principal श्री दीवान साहिब के अधीन 8 - 9 धर्म सम्बन्धी पहुंचे। गोनियाना से सुखदेव जी कुछ दिनों के लिए, श्री रमेश जी का सारा परिवार चण्डीगढ़ से डा० विनोद जी खेड़ा, राशी जी, जगदीष जी, श्रीमती सुरजीत बराड़, डा० सतिन्द्र ढिल्लों, पंचकूले से श्रीमान सुभाष जी अग्रवाल, श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान उनकी धर्म पत्नी, बेनी प्रसाद जी, चण्डीगढ़ से ही S.M. Madan साहिब (Executive Retd. Director) श्री संजय कुमार ज़ीरकपुर से अपनी सहूलियत के अनुसार सुबह या शाम या दोनों समय आकर लाभ उठाते रहे।

सभाएं करवाने के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर जी और जगदीष जी पहले ही पहुंच गए थे। किचन का अच्छा प्रबन्ध किया गया। हाजरीन अपने बर्तन आप साफ करते रहे। बाथरूमों की सफाई, साफ पानी का प्रबन्ध किया गया। प्रतिदिन तीन सभाएं (पहले 1 - 2 दिन को छोड़कर) होती रहीं, जो श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलदेव सिंह जी मिलकर करवाते रहे। श्रीमान जगदीष जी भजनों का गान करते रहे, श्रीमान जैरथ जी, मुकेश जी चावला, गोपाल जी आदि भी भजन गाते रहे। अच्छा मण्डल बन जाता था।

योगा कलास भी सुबह मीना (मिसज़ जैरथ) सुबह 7 - 8 तक लगाती रही। उसका सबको ही बहुत लाभ हुआ। अधिकारी जनों को अलग - अलग मिलकर साधन करने, पुस्तकों का पाठ करने की सेवा करने की प्रेरणा की जाती रही। कुछ धर्म सम्बन्धी उपकार स्मरण वा गुणचिन्तन लिखते रहे। अपने से बड़ों की रहनुमाई भी लेते रहे। इस प्रकार सबको व्यस्त रखने का प्रयत्न होता रहा।

सुबह की सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी और शाम की सभाएं श्रीमान बलबहादुर सिंह जी अलग अलग विषयों पर करवाते रहे। रात की सभाओं में हाजरीन के पूछने पर एक 2 विषय को स्पष्ट करके समझाया जाता रहा। यह सभा सब के लिए ज्ञानवर्धक वा उपयोगी सिद्ध हुई ।

सभाओं के संक्षेप नोट यहां दिए जा रहे हैं :-

पहली सभा - 22.4.2016 शाम 5 बजे :-
सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने पहले इस सत्संग की सफलता के लिए सहाय प्रार्थना की। इसके बाद श्रीमान जगदीष प्रसाद जी कुक्कड़ ने प्रार्थना विषयक भजन का गान किया "करो कृपा मेरे सत्गुरू, बचालो नीच जीवन से" सभापति जी ने बताया कि कुम्भ का मेला शुरू हो रहा है। बहुत इक्ट्ठ होगा। भिन्न भिन्न साधू अपनी अपनी साधू मण्डलियों के साथ स्नान करेंगे, उनमें नांगे साधू भी होंगे। कई शाही स्नान होंगे, इसको धर्म समझा जाएगा, जबकि किसी को पता नहीं कि धर्म क्या है? धर्म की आवश्यकता क्या है? परम्परागत धर्मों और सत्य धर्म में क्या अन्तर है। ऐसे प्रश्न हैं जो आज के सभ्य दिमाग़ पूछता है, परन्तु इसका कोई उत्तर नहीं मिलेगा। आज के धर्मों में झूठे प्रलोभनों और अन्ध विश्वासों में समय और धन की बर्बादी होती है। आज इस स्थान पर हम धर्म की चर्चा कर रहे हैं। इस धर्म का हमारे जीवनों से सम्बन्ध है। हमारा जीवन शरीर के बिना आत्मा भी है, जब तक मनुष्य अपने आपको नही जान सकता, तब तक वह धर्म की दुनिया में प्रवेश नहीं कर सकता। मनुष्य अपनी सब गतियां अपने भावों से प्रेरित होकर ही करता है। कितने ही दुखांत टल सकते हैं यदि मनुष्य को अपने भावों का ज्ञान हो जाए। कितनी ही दुखदाई घटनाओं का वर्णन किया जहां एक - 2 जन के नीच भावों ने दुखांत पैदा किए। भाई - 2 की जान लेता है, पत्नी के दुर्व्यहारों से तंग होकर टालसराय जैसे महान लेखक घर से निकल गए और बर्फीले मौसम के कारण मौत का शिकार हो गए। बड़े नेता वा बाबे अपनी नीच भावों के कारण ही जेलों में बन्द हैं। इसलिए हमें अपने भावों का ज्ञान होना आवश्यक है। यहां हम अपने भावों का ज्ञान पाने और सत्य धर्म के बारे में जानने के लिए इक्ट्ठे हुए हैं।

23.4.2016 - सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। भजन के बाद सभापति जी ने बताया धर्म के अडम्बरों को धर्म समझा जाता है, प्रश्न यह है कि धर्म क्या है? पाप क्या है? इनके बारे में विस्तार से बताया गया। मांसाहार और नशे क्यों खराब हैं? इन्साफ, हमदर्दी के भावों का नाश होता है। कृतज्ञता के भाव को हानि पहुँचती है। यह भाव ही आत्मा का विकास करते हैं। इनकी हानि बहुत बड़ी हानि है कई बार हम अच्छे काम करते हैं, परन्तु यदि उनमें प्रशंसा वासना की खोट हो, तो वह काम उतने अच्छे नहीं रहते। अपने शरीर की हानि करना भी पाप है, परन्तु हमारे शरीर के भीतर हमारी जीवनी शक्ति मुख्य वस्तु है। लोभ, लालच और धन अनुराग से मनुष्य ईमानदारी की हानि करता है। चारों जगतों में से किसी की भी हानि करना आत्मा की हानि करना है। ईसा मसीह ने फरमाया है कि एक हाथ से दान करते हुए, दूसरे हाथ को पता नहीं लगना चाहिए अर्थात शुद्ध भावों से दान करना चाहिए । कई जन गुरूद्वारों में जूते साफ करके अहं घटाने का साधन करत हैं। संगत में पहुँचकर अहं नहीं बढ़ाना चाहिए । सेवा करके अपने भले का साधन करना चाहिए।

23.4.2016 शाम 5.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, पहले एक भजन का गान हुआ, "जीवन ज्योति के तुम सूरज, अन्धेरा दूर करते हो" सुबह की सभा के संदर्भ में बताया गया कि मनुष्य सुख चाहता है। उसे सुख मिले, सन्मान मिले, तंदरूस्ती मिले, परन्तु हमेशा उसकी इच्छा पूरी नहीं होती। इच्छा के विरूद्ध बहुत कुछ नहीं मिलता। इसका कारण क्या है? मनुष्य का सुख अनुराग ही इसका कारण है। परन्तु यह सुख उसमें अन्धेरा पैदा करते हैं। वह सुखों का गुलाम है वा अधीन हो जाता है। मनुष्य के नीच सुख अनुराग कितने - कितने गहरे हैं, कितने घातक हैं,

इस सब के विषय में मनुष्य अज्ञानी रहता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव शक्तियों से देव ज्योति और देव तेज पैदा हुए हैं। अधिकारी जनों को जब यह रोशनी मिलती है, तो उनकी योग्यता के अनुसार उनका आत्मिक अन्धकार दूर हो जाता है। उनको दूसरों के प्रति व्यवहार प्रकृत रूप में नज़र आ जाते हैं। अपनी दोषी, पापी और अपराधी अवस्था का कुछ बोध हो जाता है। सभापति जी ने अपने निकटी सम्बन्धों में अपने व्यवहारों अपने भीतर उच्च भावों के घाटे और नीच घृणा के अधिकार का दृश्य पेश किया। हमारे गुरू की यही शिक्षा है कि नीच सुख अनुराग और नीच घृणा ही मनुष्य के शत्रु हैं।

24.4.2016 - अप्रैल सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, भजन के गान के बाद देव स्तोत्र का सामूहिक गान हुआ। सभापति जी ने हृदयगत भावों से व्याख्या की, फिर "अद्वितीय है रूप तुम्हारा, जन समाज में हे भगवन' नामक भजन जगदीष जी ने भावपूर्ण स्वर में गाया। फिर श्रीमन जी ने दीनतापूर्वक आर्शीवाद प्रार्थना की। मनुष्य के लिए अपने सुखों, सम्बन्धियों और प्रलोभनों से ऊपर उठना और शुभ की ओर जाना असम्भव है। मनुष्य ने सदियों से जाना है कि यह संसार दुखों का घर है। संसार जल रहा हैं। बेजुबान जानवरों को बहुत बेदर्दी से मारा जाता है। सुबह तक ही लाखों पशुओं को मारा जा चुका है। धर्म का आरम्भ सुख प्राप्ति की कामनाओं से हुआ है। पढ़े लिखे, अमीर, गरीब सब दुखी हैं। उन्होंने लखनऊ के एक सुख सुविधाओं से सम्पन्न पति पत्नी की कहानी बताई कि कैसे वह इंगलिश में बोलकर एक दूसरे की सलबातें सुना रहे थे। वह बहुत पढ़े लिखे और अमीर होकर भी अपने दुख का कारण नहीं समझ सके। मनुष्य ग़ल्त सोचते हैं कि ईश्वर को भुलाए रखने से ही दुख होते हैं। सारे दुखों और सन्ताप का कारण यहीं है। शारीरिक दुखों का कारण भी बहुत देर से खोजा गया। रोगों के कारण किटाणु हैं, जीवाणु हैं या पूरी खुराक न मिलना है।

परम पूजनीय भगवान ने वैज्ञानिक विधि और विकास के नियम को जानकर मनुष्य के दुखों का असल कारण ढूढ़ा है। मनुष्य का लक्ष्य सुख प्राप्त करना वा परमानन्द प्राप्त करना नहीं है। यही प्रकृति उसके दुखों का कारण है। बर्नारड शाह ने कहा है हमारी कबरें हमारी रसोई में खोदी जाती हैं अर्थात हमारे स्वाद का सुख बहुत सारी बिमारियों वा दुखों का कारण बनता है। एक M.P. के वज़ीर शूगर के मरीज़ थे, परन्तु वह मीठे की कमज़ोरी को नहीं जीत सके। एक नम्बरदार सरदार नशे के अनुराग कारण भिखारी बनने के लिए मज़बूर हो गया। सारी मानवता इस सुख भाव के अधीन है। इसलिए दुख भोग रही है। सच्चे सम्बन्ध वही हैं, जो नीच सुखों की तृप्ति नहीं करते, बल्कि उनसे बचने का संग्राम करते हैं। रोग जानने से वा उसका ईलाज करने से दूर होता है। धन का प्रेमी ईलाज भी नहीं करवा सकता। मनुष्य अपने भावों के कारण ही लड़ाईयां और दुख भोगते हैं।

गुरू महाराज के देव प्रभाव सच्चे करिश्में करते हैं। श्रीमान सरदार गुरूमुख सिंह जी को गुरू महाराज ने कन्धे पर हाथ रखकर बदल दिया, यह कहकर कि "किसी बेगुनाह को सताने की भी कोई हद होती है" और भी आश्चर्यजनक परिवर्तनों का वर्णन किया। श्रीमान सन्त बजरंग बिहारी जी ने पाप से कमाई अपनी हवेली त्याग दी, सर्दी में ठुठरते रहे, परन्तु खूंटी पर टंगा हुआ बेईमानी से बना कोट नहीं पहना। बहुत अच्छा वातावरण बना।

24.4.2016 शाम 5 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। "बड़े धन्यभाग्य उनके हैं जो गुरू

चरणों में आते हैं।" सभापति जी ने एक ग्रामीण स्त्री के परिशोध की घटना बताकर हाजरीन से पूछा कि क्या किसी और धर्म में ऐसा होता है? क्या कोई धर्म ऐसे परिशोध की उदाहरणें पैदा करता है? एक बज़ुरग ने भी इसी तरह अपने पाप का भरी सभा में इजहार किया। एक नौजवान ने भरे हाल में अपनी पत्नी के पैरों पर सिर रखकर क्षमा मांगी, इस प्रकार कई घटनाओं का वर्णन किया और पूछा कि और धर्मो में ऐसी घटनाएं क्यों नहीं घटती? फिर बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव ज्योति और देव शक्ति सम्पन्न प्रभाव ही ऐसे सच्चे करिश्में पैदा कर सकते हैं। देव प्रभावों के बिना ऐसे करिश्में सम्भव ही नहीं। एक बज़ुरग प्रिंसीपल स्वयं खड़े हो गए, उन्होंने अपने जीवन में आए परिवर्तन रूपी करिश्मे का स्वंय ब्यान किया। अपनी आंखों से सच्चा करिश्मा देखकर हाज़िर जन धन्य धन्य हो रहे थे।

क्या इन देव प्रभावों से बढ़कर कीमती वस्तु कोई हो सकती है? बेशक देव ज्योति और देव तेज ही दुनिया के सबसे मूल्यवान पदार्थ है जिसकी महिमा वर्णन नहीं हो सकती। इस मूल्यवान पदार्थ से अकल्पनीय घटनाएं होती हैं और मानवता का परम हित होता है।

25.4.2016 सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि नीच भावों से मनुष्य नीच बनता है और उच्च भावों से उसका विकास होता है। काम वासना, स्वाद वासना मनुष्य का नाश करती हैं। ज्ञान प्राप्ति के बिना मनुष्य विद्वान नहीं बनता। धर्म का मूल भाव श्रद्धा भाव है। इसकी व्याख्या करके बताया गया कि श्रद्धावान जन दूसरों की महानता की सुन्दरता पर निहाल हो जाता है। अपने आपको तुच्छ देखकर झुकने के लिए मजबूर हो जाता है। उस महान व्यक्ति की महिमा गाए बगैर नहीं रह सकता। विशुद्ध परोपकारी जनों के परोपकार के कामों में सहायक होकर धन्य धन्य अनुभव करता है। श्रद्धा भाव मनुष्य को महान आत्मा के गुण ग्रहण करने की सामर्थ्य देता है।

सभापति जी ने पंजाब के महान परोपकारी भगत पूर्ण सिंह जी की महानता और उनकी माता की महानता का हृदयगत भावों से वर्णन किया, जिस माता ने पुत्र को इस सेवा के लिए प्रेरित किया। उस महान फ्रांसीसी डाक्टर का ब्यान किया, जिसने इंजैक्शन की खोज करने के लिए मच्छरों के डंकों से अपनी जान दे दी। मच्छर के डंक को समझकर साईंसदानों ने इंजैक्शन की ईज़ाद की। सभापति जी ने श्रद्धा भाव को पैदा करने के लिए गुण चिन्तन करने का नियम बताया।

25.4.2016 शाम 5 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, इस सभा में सभापति जी ने बताया कि विशुद्ध परोपकारी अपने परोपकार के काम को, दुख में वा सुख में कभी त्याग नहीं करते। मान सन्मान से ऊपर होकर वह परसेवा में लगे रहते हैं, इसी में खुशी और रस अनुभव करते हैं। माता पिता भी बच्चों की परवरिश इसी प्रकार निस्वार्थ भाव से करते हैं। बच्चे चोर हो जाएं, बदचलन हो जाएं, बदनाम हो जाएं, मां बाप फिर भी उनको त्यागते नहीं, सदा बच्चों का भला चाहते हैं, इसलिए सन्तान के लिए विशुद्ध परोपकारी होते हैं। इसलिए सन्तान के लिए श्रद्धा भाजन होते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने स्वंय इस महान रूप को मनुष्य जाति पर रोशन किया है। अति सुन्दर भजन उन्होंने बनाया है, "श्रद्धा भाजन मात-पिता जी, श्रद्धा भाव करूं उपहार।"

26.4.2016 सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने श्रद्धा भाव के

विषय में बताते हुए कहा कि उच्च जनों के गुण चिन्तन करते करते और उन्हें लिखते लिखते श्रद्धा पैदा हो जाती है। जो जन स्वार्थ त्याग कर कुछ औरों के भले के लिए समर्पित कर देते हैं, वही जन सच्चे परोपकारी होते हैं। ऐसे महान व्यक्ति के आगे श्रद्धावान अपने आपको तुच्छ और हीन समझता है। उसकी महिमा गाने वा वर्णन करने के लिए मजबूर हो जाता है। उसके महान कारज में अपनी शक्तियां लगाकर वा रस प्राप्त करता है। सभापति जी ने कलकत्ता के महान परोपकारी श्री विद्यासागर जी के परोपकारी जीवन का वर्णन किया। यह वर्णन बहुत ही प्रभावशाली था। इसके बाद सर गंगाराम जी की महानता का वर्णन किया गया और भी महान पुरूषों के जीवनों पर रोशनी डाली गई।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने भी एक बहुत नेक और ईमानदार अध्यापक के सुन्दर गुणों का वर्णन किया।

26.4.2016 शाम 5 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, परम पूजनीय भगवान देवात्मा की विज्ञानमूलक शिक्षा का वर्णन करते हुंए बताया कि मनुष्य सुख को प्यार करता है और धीरे-2 इसका अनुरागी बन जाता है। यदि उसमें कोई रूकावट आए तो वह दुखी होता है, घृणा से भर जाता है। बोलचाल में इस घृणा को क्रोध कहा जाता है। कई हत्याओं और आत्म हत्याओं का कारण यह नीच घृणा है। सम्बन्धों में दूरी, लड़ाई इसी कारण है। डाक्टर श्री राम जी के बेटे मदन मोहन लाल जी को देव प्रभावों के एंटीडोट ने कैसा सेवाकारी और श्रद्धावान बेटा बनाया, जो नीच घृणा के शिकार होकर बहुत गुस्ताख़ बेटे प्रमाणित हो रहे थे। अपने स्वंय के जीवन से और अन्य कई उदाहरणों के द्वारा अपने विषय को बहुत स्पष्ट वा प्रभावशाली ढंग से सुनाया और बताया कि नीच घृणा के घातक प्रहार से कैसे बचा जा सकता है।

27.4.2016 सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने ब्यान किया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा की हस्ती एक अलौकिक हस्ती है। उन्होंने मनुष्य के असल स्वभाव को जाना है। उन्होंने फरमाया है कि मनुष्य जगत का विकास पशु जगत से हुआ है। इसलिए उसके भीतर पशु वृति वर्तमान है। मशीनरी में यदि बैरंग टूट जाए तो वह और भी बहुत कुछ तोड़ देता है। मनुष्य ज्ञान के साथ नहीं उच्च भावों से अच्छा बनता है। पापों से मुक्त होकर उच्च भावों के द्वारा सच्ची मानवता वा इन्सानियत का उदय होता है। कोई मनुष्य स्वैविकसित नहीं। बल्कि उसका अस्तित्व बेशुमार मेहरबानियों की देन है।

सभापति जी ने शुक्रगुज़ारी के भाव के चार स्तर बताए (1) किसी के उपकार को अनुभव करना, (2) फिर अपने आपको उसका कर्ज़दार अनुभव करना (3) उस कर्ज़े को अपनी छाती पर बोझ की न्याई अनुभव करना (4) उपकारी की सेवा करके, भेंट देकर, सन्मान देकर उस कर्ज़े को उतारने के लिए कटिबद्ध होना। यह लक्षण हमारे भीतर यदि नहीं पाए जाते तो हम कृतज्ञ नहीं हैं। उन्होंने सरदार जमीयत सिंह जी और स. सावन सिंह जी की दिल को हिला देने वाली घटनाएं बताई। सरदार हरनाम सिंह जी और उनके परिवार के सभापति जी ने अपने ऊपर हुए उपकारों को हृदयगत भावों से वर्णन किया। उससे प्रभावित होकर जगदीष जी ने भी अपने उपकारी भाई साहिब के उपकारों का भरे दिल से वर्णन किया। सुभाष जी अग्रवाल ने बचपन में उनकी जान बचाने वाले श्री बख़्शी जी के उपकारों का वर्णन किया।

27.4.2016 शाम 5.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर जी, इस सभा में बताया गया कि हमारे पुराने धर्मों में सम्बन्धों को माया कहा गया है।

परमात्मा वा ब्रह्म को असल सचाई कहा गया है।

इस विश्व की हकीक़त को देवात्मा ने जाना है। विश्व के हर अस्तित्व को वास्तव में देखा और ब्यान किया। सम्बन्धों के बगैर मनुष्य के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सम्बन्धों में किए हितकर व्यवहार सम्बन्धों में मेल वा मिठास लाते हैं। सम्बन्धों को सुखदायक बनाते हैं। कई उदाहरणों के द्वारा विषय को समझाया गया। गुरू महाराज के दर पर आकर और उनके देव प्रभाव पाकर किस प्रकार से स्वर्गीय दृश्य पैदा होते हैं और विकास का पथ खुल जाता है और जीवन की उच्च कीमतें नज़र आती हैं, मनुष्य विकास का राही बन जाता है, उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया।

28.4.2016 सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, सभापति जी ने बताया कि शुक्रगुज़ारी के बिना कोई इन्सान अच्छा नहीं बन सकता। आम तौर पर धन्यवाद या Thank you कहना एक रस्म है और शिष्टाचार है, इसके बिना कुछ नहीं। विदेशों में इन शब्दों का प्रयोग न करना असभ्यता का अंग समझा जाता है। सभ्य समाज में पति पत्नी एक दूसरे के उपकारों को महसूस करके सन्मान और सेवा का व्यवहार करते हैं। शुक्रगुज़ारी के बिना अच्छे पति पत्नी भी नहीं बन सकते। सभापति जी ने अपने एक उपकारी अध्यापिक के उपकारों का वर्णन किया और उनको कुछ सेवा करके तृप्ति मिली। हाजरीन भी प्रभावित होकर अपने उपकारियों के आगे झुक रहे थे। उन्होंने फिर एक राष्ट्रपति की कृतज्ञता को दिल को छूने वाली घटना बताई।

सभा के अन्त में मुकेश जी चावला ने बहुत सुन्दर भावों से अपनी माता के उपकारों का वर्णन किया, उनका दिल और आंखें दोनों भरी हुई थी। सबने ऐसे उच्च प्रभावदायक मण्डल की आवश्यकता को अनुभव किया।

28.4.2016 - शाम 5.00 बजे :- इस सभा के सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। पहले "लोको नीचशक्तियां बुरीयां, छुरीयां मारदीयां" नामक भजन का गान किया। सभापति जी ने नीच शक्तियों के विषय में बताते हुए, विशेषकर नशों के द्वारा जो भयानक परिणाम निकलते हैं, उनका वर्णन किया। धन अनुराग के तबाही लाने वाले नतीजों का चित्रण किया। गुरू महाराज के देव प्रभावों के द्वारा ही इनके ज़हरीले डंकों से बचना सम्भव है। कई जीवनों में आए इन्कलाब का वर्णन किया जो बहुत ही प्रभावशाली थे।

29.4.2016 - सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, "मैं लुट चुका बड़ा हूं, मुझको बचालो भगवन" नामक भजन का गाया किया गया। सभापति जी ने बताया कि मनुष्य धर्म के साधन करते हुए भी, नेक होकर भी इस भूल के सदा शिकार रहते हैं, कि "मै ठीक हूं" यह मनुष्य में सहज विश्वास है। मैं अच्छा हूं, मैं निर्दोष हूं, परन्तु प्रत्येक मनुष्य सदा ठीक नहीं होता और नहीं हो सकता। क्योंकि उसके भीतर जो सुख अनुराग हैं, वह उसे पैर पैर पर नीच गतियां करवाते हैं। मनुष्य यह करने के लिए मजबूर और बेबस है। एक 2 जन अपनी बिमारी में डाक्टरों की सलाह नहीं मानते थे, एक धर्म सम्बन्धी का पहले केवल अंगूठा कटना था, धीरे 2 पूरी टांग काटनी पड़ी। कई विद्यार्थियों की घटनाएं बताकर समझाया गया कि वह अपने आपको ठीक समझकर अपने से अधिक योग्य अध्यापिकों से कुछ सीखने के लिए राजी नहीं थे। इसलिए अच्छा भविष्य नहीं बना सके। सभापति जी ने बताया कि जब मैंने अपने बड़ों की बात मानी तो सदा मेरा हित हुआ।

इस सभा में एक जन जो बंगा से पहुँचे हुए थे, ने अपनी कई गल्तियों का दुखी दिल से वर्णन

किया। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने भी अपने एक निकटी सम्बन्धी के विषय में अपने बुरे व्यवहार का वर्णन किया। एक नये जन मदान साहिब सभा के बाद बताने लगे कि मैं इस मण्डल से बहुत प्रभावित हुआ हूं।

29.04.2016 - शाम 5.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, सभा से आधा घण्टा पहले धर्म सम्बन्धियों ने मिलकर भजन गाए। सभापति जी ने बताया कि मनुष्य की ऐसी प्रकृति है कि स्वंय वह अपनी हानि करता है। अपनी हस्ती का विनाश करता है। और दुखी भी होता है। अपनी इस प्रकृति और हानि को देखने के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव ज्योति की आवश्यकता है। एक पटवारी एक किसान और एक सरपंच साहिब की बर्बादी की घटनाएं बताई। मनुष्य का शत्रु उसका अपना स्वभाव है। और शत्रु तो दूर हैं, परन्तु उसके स्वभाव का शत्रु उसके भीतर है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी 15 मिन्ट इसी विषय को और स्पष्ट किया। अपनी एक गरीब बकरियां चुराने वाले जन के सम्बन्ध में अपनी नीच गति को बहुत दुख के साथ वर्णन किया। गुरू महाराज का धन्यवाद करते हुए उनका हृदय भरभर कर आता था जो गुरू ऐसी प्रकृति को दिखाकर अपनी योग्यता के अनुसार घटाते हैं। यह सभा बहुत प्रभावदायक थी।

1 मई इतवार सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, यह सभा इस सैशन की आखरी सभा थी, पहले कुछ भजनों के बाद सुन्दर द्वार और फूलों के गुरू महाराज की छवि का अर्चन किया गया। सभापति जी ने सभा की सफलता के लिए सहाय प्रार्थना की। श्रीमान जगदीष जी ने अद्वितीय है रूप तुम्हारा, जन समाज में हे भगवन" नामक भजन का भावपूर्ण होकर गान किया।

सभापति जी ने बताया कि नेचर के विकास क्रम में परम पूजनीय भगवान देवात्मा नई शक्तियां और योग्यताएं लेकर आर्विभूत हुए है। अपनी नई रोशनी में नई सचाईयां और नया लक्ष्य लेकर आए हैं। उन्हें अभी तक मानवता ने न जाना है और न पहचाना है। उन्होंने पहली बार मनुष्य जीवन को प्रकृत रूप में देखा है कि मनुष्य सुख का अनुरागी होकर सदा झूठ और पाप का शिकार बनने के लिए है। उन्होंने मानव जीवन के उद्धार का नया पलैन बताया है। उन्होंने फरमाया है कि मनुष्य मिथ्या, कल्पना और वहमों का शिकार है। उसकी सोच विज्ञान पर आधारित नहीं है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्वीकार करके मिथ्या के भूत से छुटकारा होता है। मनुष्य सुखों का रसिया होकर स्वभाविक नीच सुखों का गुलाम बनकर बर्बाद हो रहा है। उसकी सब प्राप्तियों और उपलब्धियों पर पानी फिर रहा है। वह अनचाहे दुखों में घुलघुल कर नष्ट होने के लिए मजबूर है। उसके दुख रब से वा राम से बेमुख होने पर नहीं, नीच सुखों की गुलामी के कारण है। इनकी गुलामी से मुक्ति आवश्यक है। यह किसी धर्म के प्लान में शामिल नहीं। मनुष्य एक पढ़ा लिखा, धन पदार्थो का स्वामी, उच्च पदवियां रखकर भी पशु है। उसके भीतर पाश्विक वृतियां हैं यह उसे हैवान बना देती हैं। उसके भीतर सात्विक वृतियां और भावनाएं पैदा करने की आवश्यकता है। बिना उच्च भावों के सम्बन्धों में नर्क पैदा होता रहेगा। मनुष्य के आत्मा की हानि सबसे भयानक है। मनुष्य का लक्ष्य पुर्नजन्म से मुक्ति पाना नहीं, स्वर्ग प्राप्ति नहीं, रब वा ईश्वर की प्राप्ति नहीं, उसका लक्ष्य अपने आत्मा का ज्ञान पाना, उसकी रक्षा करना और उसका विकास करना है। यह लक्ष्य केवल और केवल देवात्मा के धर्म रूप से सम्बन्ध प्राप्त करके, उनके देव प्रभावों तक भरसक रसाई

करने से पूरा हो सकता है। कोई मिथ्या पाठ, पूजा, नमाज, रोज़े मनुष्य जीवन का रता भर भी भला नहीं कर रहे। यह सभा बहुत ज़ोरदार थीं। और प्रभावदायक थी, 11 बजे तक बहुत ध्यानपूर्वक हाजरीन ने सभा सुनी और उसके बाद भाव प्रकाश हुए।

भाव प्रकाश

श्री गोपाल कृष्ण जी (गंगा नगर) :- यहां का वातावरण बहुत प्रभावित करता रहा। सभाओं में दिल की अवस्था बहुत अच्छी बनती रही। मेरे भीतर इतनी होश नहीं, आयोग्यता बहुत है। योग की कलास से सेहत में कुछ बेहतरी आई, परन्तु आत्मा का व्यायाम इससे भी अधिक आवश्यक है। बड़ों के गुण दिखाई दिए हैं। पिता जी के सम्बन्ध में अपने दुर्व्यवहार सामने आए हैं। अपनी काम वासना सम्बन्धी ग़ल्तियां नज़र आई हैं। उन्हें याद करके रोने के लिए बेबस होता रहा। इस वातावरण में आकर बहुत लाभ होता है। श्री रमेश जी और बहन जी (भरे दिल के साथ) ने बहुत टूट फूट कर सेवा की है। स्वयं बुरा बनने और दूसरों को बुरा बनाने का ठेका लेने से मुझे बचना चाहिए। दिल में दीनता पैदा करने की आवश्यकता है। गुरू महाराज की दी हुई संगत की कृपा बार-बार महसूस होती रही है। मेरा अहं मुझे अन्धा बनाए रखता है।

इस सत्संग की सभाओं में से ऐसा लगता है कि नई दुनिया खुल गई है। मेरा शारिरक, आत्मिक, मान्सिक फायदा हुआ है, जैसे यहां चारों तरफ फूल ही फूल हैं। यहां का हितकर वातावरण आत्मा का तो हित कर ही रहा है साथ में शरीर को भी स्वस्थ कर रहा है। और मान्सिक शांति भी प्राप्त हुई है। सुबह-शाम श्रीमान जी ने जो हमें देव अमृत पिलाया है। उसका फायदा बहुत हुआ है। 10 दिन ऐसे लगते हैं जैसे 10 मिनट हों। यहाँ पर आकर समय का पता ही नहीं चला। धर्म-सम्बन्धियों ने खूब सेवा की, यहां पर आकर अपनी आत्मा की तरफ ध्यान गया है। यहां का भोजन बड़ा ही सात्विक रहा। यहाँ आने के बाद जाने को दिल ही नहीं करता यहां पर भरपूर सुविधा मिला। सुबह-शाम सभा और हितकर पुस्तकों का पाठ चलता रहा। बाहर की दुनियां में जाने को मन ही नहीं करता। यहाँ स्वर्ग सा वातावरण है, अपनी आत्मा का विकास हुआ है। आत्मिक बल बढ़ा है। ऐसी सभाएं हर माह होनी चाहिए। मुझे मेरे सम्बन्धी उपकारी नज़र आए हैं। यहां आकर, धर्म के भाव जागे हैं। धर्म का दान पाया है। मुझे दौलत, इज्ज़त, विद्या तरक्की चाहे कितनी मिल जाए परन्तु उच्च असरों के बगैर संतोष नही आएगा। धर्म के बगैर मुझे, कहीं न कहीं फंस जाना है। सभा में बताया गया कि सुख तुम्हारा लक्ष्य नहीं है। शुभ तुम्हारा लक्ष्य है। भगवान आपका बल पाकर जा रहा हूँ वापिस। तेरे असरों से बाहर नही जा रहा हूँ असर लेकर जा रहा हूँ। कहीं पर भी चला जाऊं मगर फायदा यहीं पर ही हुआ है। पहली सभा में श्रीमान जी ने बताया कि हम अपने दुश्मन खुद हैं, हमारे नीच भाव ही हमारे दुश्मन हैं।

श्रीमान ने बताया कि पेड़ के पत्ते, रेत के कण, बारिश के कण, तारों की गणना, अपने सिर के बालों की गणना कर नहीं सकते, उसी प्रकार उपकारियों के उपकार की बारिश हम पर हुई है। उनका कर्जा उतारा नहीं जा सकता । तो जा रहा हूँ उपकारियों के कुछ न कुछ काम आ सकूँ। ऐसा बल लेकर भगवान का।

अशोका जी :- मैं भगवन को बार-2 धन्यवाद देती हूँ, मान्य श्रीमान जी का भी धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने हम अन्धों को, अपाहिजों को बंदा बनाने के लिए, भगवान की शिक्षा को तथा भगवान की ज्योति शक्ति से क्या 2 कारज हुए हैं तथा हो सकते हैं, हम तक पहुँचाने के लिए इस सत्संग का आयोजन किया। श्रीमान जी एक-2 व्यक्ति की Individual

help करके उसका जीवन बनाने में सहायता करते रहे। सचमुच यदि अपना जीवन सच्चे अर्थो में बनाना है, तो गुण, चिन्तन, उपकार देखने अपनी कमियाँ देखना जरूरी है। मैं भी जो इतने सालों से सेविका कहलाकर भी जो अपने जीवन का विकास नहीं कर पाई, उसका कारण भी इसी में ही स्पष्ट रुप से प्रतीत हुआ। मुझे पता चल गया कि जैसे मैले कपड़े की मैल धोए बिना उस पर कोई रंग नहीं चढ़ाया जा सकता उसी तरह अपनी खराब हालत को जड़ से खत्म किए बिना कुछ संवरने वाला नहीं। तो वही हाल होगा कि घूम फिर कर वहीं वापिस उसी पड़ाव पर दोबारा पहुँच जाना, मंजिल तक तो पहुँचेगे ही नहीं।

मैंने भी पक्की प्रेरणा ली है कि मैं भी तीन कापियां प्रतिदिन लिखा करूँगी, मैनें शुरु भी कर ली हैं। दूसरी प्रेरणा ली है कि चारों जगतों में से किसी की भी सच्ची लगन से सेवा किए बिना मैं सोऊंगी नहीं। यहां बहुत सेवा पाई है। क्या ठहरने में, क्या खाने में, क्या योग के द्वारा इतना ध्यान होता रहा कि घर से भी बढ़कर। सभी के लिए धन्यवाद।

मुकेश जी चावला (पदमपुर) :- गुरू महाराज के चरणों में कोटि-2 नमस्कार। सत्संग की 10 दिन की सभाओं में पूरा समय देने के लिए मन की अवस्था बहुत विघ्न डाल रही थी परन्तु कुछ उच्च प्रेरणाओं से यह समय निकल सका। सभाओं में शामिल सदा ही उच्च प्रभाव मिलते हैं हृदय उच्च प्रेरणाएं हासिल करता है इस बार की सभाओं में गुरू का अमृत अच्छी मात्रा में मिलता महसूस हो रहा था। साधन, सेवा और सभाएँ कुछ-कुछ उच्च रस प्रदान कर रहे थे। सभाओं के उच्च वातावरण से अपनी हार्दिक अवस्था पर बार-2 ध्यान जाता रहा अपनी मलिनताओं को स्मरण कर कई बार दिल जोर-जोर रोता रहा। अपने उपकारियों की महिमा दिखी, उनके प्रति अपनी अवज्ञाएँ, गहरे दिल से महसूस हुई।

(1) पिता जी के सुन्दर गुण नज़र आए वे नेक हृदय रखते हैं, ईमानदार हैं बिजनेस में अपने भाई-बन्धुओं के द्वारा चालाकी, बेईमानी सिखाने का ज़ोर डालने पर भी वे इसे अच्छा नहीं मानते थे न ही उन्होंने ऐसा किया। वे बड़े-बुजुर्गो के प्रति आदर, सन्मान का भाव रखते है उनके अन्दर किसी के प्रति भी द्वेष, दुश्मनी का भाव नहीं हैं, बहुत ही सरल हृदय हैं एक बार एक शराबी-कसाई ने उनको छुरा मार दिया था जिससे वह बहुत खतरे की हालत में पहुँच गये थे परन्तु उसके खिलाफ भी उनके अन्दर कभी घृणा का भाव नहीं देखा। मेरे पिताजी के मुझ पर साधारण उपकारों के भिन्न आध्यत्मिक उपकार भी हैं। मुझे प्रतीत होता हैं कि कुछ-कुछ ईमानदारी, बड़ों का सन्मान व अन्य कई अच्छे गुणों की विरासत मुझे मेरे ननिहाल से व खास तौर पर पिता जी से मिली है, मुझे उन्होंने बुराईयों से काफी हद तक बचाए रखा, Positive माहौल दिया, कभी किसी सत्संग में जाने से नहीं रोका बल्कि कम आमदनी के बावजूद खर्चे भेजते रहे उनके काफी उपकारों, मेहरबानियों के बावजूद भी मैं कुछ बड़ा होने पर, अपने आपको ज्यादा समझदार जान कर उनसे ऊँची आवाज में बात करता, बहस करता, आदर सन्मान न देता ऐसी अपनी कई गुस्ताखियाँ याद आ-आ कर शर्मीन्दिगी महसूस हो रही है, दुख हो रहा है।

मेरे एक उपकारी डा० मुंशा सिंह जी के मुझ तुच्छ पर बहुत उपकार हैं, मुझे उन्होंने देव-समाज में लाने का महा उपकार किया है। ये उससे पहले भी मरे आध्यात्मिक ज्ञान में बहुत हैल्पर रहे हैं, उन्होंने मुझे बड़ा "समय" दिया है।

यहाँ रहकर भी बहुत से जनों की सेवाएँ दिल को छूती रही, सुखदेव जी की बहन जी और उनके

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

बहनोई जी ने हमारी अपने बहुत सारे सुख-आराम छोड़कर अथाह सेवा की है। दिन रात लगे रहे, दिल बहुत झुक रहा है, अपनी तरफ से उनकी क्या सेवा करें, समझ नहीं आ रहा। गहरे दिल से धन्यवाद निकल रहे हैं।

मिसेज डा० जयरथ जी ने बड़ी बहन, अथवा माता की तरह व्यवहार किया, रोज योग क्लास करवाई, शारीरिक फायदे बताए। सभाओं का तो कहना ही क्या दिमाग में काफी तत्व उज्वल हुए। समझ में आया कि जिस तरह भोजन, और व्यायाम शरीर के लिए अति जरूरी है, उसी तरह आत्मा के लिए भोजन और व्यायाम भी अति जरूरी है, जो कि उच्च साहित्य, उच्च वातावरण, परोपकार के कार्य और अपनी नीचताओं की ओर ध्यान ले जाना जरूरी है। इसके लिए निज के साधन में रोज अपने उपकारियों का, उनके द्वारा पाए उपकारों और उनके सम्बन्ध में अपनी नीचताओं का स्मरण करना है और उन्हे लिखना है।

यहां आकर बहुत भला हुआ है, जाने को दिल नहीं करता। बहुत हरियाली और ठंडक मिलती रही। पुस्तकों का जैसे भरपूर बाग मिल गया, उपकारी नज़र आए हैं। मां के उपकार नज़र आए है। अपनी कमियां नज़र आई है। जहां जितना भला हुआ है, कहीं नहीं हो सकता। (इस नौजवान ने भाग-भाग कर बहुत सेवा की)

श्रीमान प्रिंसीपल पी. सी. दिवान जी (गंगानगर):- एक सन्त अपना जूता किसी धर्म स्थाना पर ठीक प्रकार से उतारते और उन्हें जोड़कर ठीक प्रकार से रखते और दूसरों के अनापशनाप उतारे हुए जूतों को भी तरतीब से रखते और उन्हें झाड़ पोंछ देते और कहते इससे मन में ठहराव आता है। यहां आकर जो मेरे मन में भी आया करता है। यहां आकर पता लगा कि अपनी कमीयां देखनी हैं और लिखनी हैं और उन्हें दूर करना है। देव धर्म की शिक्षा एक बड़े नैशनल हाईवे की तरह साफ, सीधी और स्पष्ट है। इसके बिना सब घरों में झगड़े हैं। इस शिक्षा को पाकर और इस पर अमल करके उनके झगड़ों को ठीक करना है। गुरू महाराज के प्रभावों से अपनी ग़ल्तियां नज़र आई हैं। अब उन्हें सुधारूंगा और घर के वातावरण को भी जाकर ठीक करूंगा।

योग कराने वाली मैडम के धन्यावादी हैं, उससे बहुत लाभ हुआ है। इसको भी जारी रखने की कोशिश करूंगा।

श्रीमान अनिल कुमार जी (पदमपुर) :- मुझे इस सत्संग में बैठकर तीन बड़े-2 नीच अनुराग नज़र आए है, वह हैं आलस्य अनुराग, काम अनुराग और

शेष पृष्ठ 2 पर

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts